International Journal of Innovations in Research
ISSN: 3048-9369 (Online)

डिजिटल युग में भारतीय ज्ञान परंपरा का संरक्षण

डॉ. ललिता गोयल
सहायक प्राध्यापक
शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, किला भवन, इंदौर
Emal id: lalitaatode@gmail.com

DOI: **https://doi.org/10.5281/zenodo.18773372**

सारांश

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की प्राचीनतम, समृद्ध तथा बहुआयामी ज्ञान प्रणालियों में से एक है, जिसने मानव सभ्यता को बौद्धिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक दिशा प्रदान की है। वेद , उपनिषद, पुराण, दर्शन, आयुर्वेद, योग, गणित, खगोलशास्त्र, वास्तुशास्त्र, संगीत, नृत्य, साहित्य, लोककथाएँ तथा शिल्पकला जैसी विधाएँ भारतीय चिंतन की गहराई और व्यापकता को प्रतिबिंबित करती हैं। यह ज्ञान परंपरा केवल सैद्धांतिक नहीं रही, बल्कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र—स्वास्थ्य, शिक्षा, समाज, नैतिकता और प्रकृति के साथ संतुलन—से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी रही है।डिजिटल युग ने सूचना के सृजन , संग्रहण, विश्लेषण और प्रसार की प्रक्रियाओं में अभूतपूर्व परिवर्तन किए हैं। इस तकनीकी परिवेश में भारतीय ज्ञान परंपरा का संरक्षण केवल प्राचीन ग्रंथों , हस्तलिखित पांडुलिपियों या मौखिक परंपराओं को सुरक्षित रखने तक सीमित नहीं है , बल्कि उन्हें आधुनिक संदर्भों में पुनः व्याख्यायित कर वैश्विक समाज के लिए सुलभ और उपयोगी बनाना भी है। डिजिटलीकरण , डिजिटल अभिलेखागार, ई-लाइब्रेरी, ऑनलाइन पाठ्यक्रम, ऑडियो-विजुअल दस्तावेज़ीकरण तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसी तकनीकें इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। हालाँकि, भारतीय ज्ञान परंपरा के डिजिटल संरक्षण के समक्ष कई चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं, जैसे—प्रामाणिकता का संरक्षण, संदर्भहीन प्रस्तुति का खतरा, तकनीकी संसाधनों की असमान उपलब्धता , भाषा एवं लिपि संबंधी जटिलताएँ तथा बौद्धिक संपदा अधिकारों की समस्या। इन चुनौतियों से निपटने के लिए अकादमिक संस्थानों , सरकारी एजेंसियों, तकनीकी विशेषज्ञों और पारंपरिक विद्वानों के बीच समन्वित प्रयास आवश्यक हैं। यह शोध पत्र डिजिटल युग में भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण की आवश्यकता , संभावनाओं, प्रमुख चुनौतियों तथा व्यावहारिक समाधान रणनीतियों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि यदि डिजिटल तकनीकों का विवेकपूर्ण और संवेदनशील उपयोग किया जाए, तो भारतीय ज्ञान परंपरा न केवल सुरक्षित रह सकती है , बल्कि वैश्विक स्तर पर मानव कल्याण के लिए एक सशक्त मार्गदर्शक भी बन सकती है।

कुंजी शब्द:भारतीय ज्ञान परंपरा, डिजिटल युग, संरक्षण, डिजिटलीकरण, सांस्कृतिक विरासत

Licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0)

1. प्रस्तावना

भारतीय सभ्यता की पहचान उसकी ज्ञान परंपरा से जुड़ी हुई है। सहस्राब्दियों से गुरु–शिष्य परंपरा के माध्यम से यह ज्ञान पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होता रहा है। भारतीय ज्ञान परंपरा वेदों, उपनिषदों, आयुर्वेद, योग और अर्थशास्त्र जैसे ग्रंथों से समृद्ध है , जो जीवन के समग्र दर्शन को प्रतिपादित करती है। ताड़पत्रों , भोजपत्रों, हस्तलिखित ग्रंथों , मौखिक परंपराओं और लोकसंस्कृति के माध्यम से ज्ञान का संरक्षण किया गया। किंतु आधुनिकता, वैश्वीकरण और जीवन-शैली में बदलाव के कारण पारंपरिक ज्ञान प्रणालियाँ संकट में हैं।

डिजिटल युग ने ज्ञान के संरक्षण और प्रसार के लिए नए अवसर प्रदान किए हैं। इंटरनेट , डिजिटल बैंकिंग, ई-पुस्तकें, ऑडियो-वीडियो रिकॉर्डिंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और क्लाउड कंप्यूटिंग जैसी तकनीकों ने ज्ञान को सुलभ, सुरक्षित और व्यापक बनाया है।डिजिटल युग में स्मार्टफोन , इंटरनेट और एआई के प्रादुर्भाव से यह परंपरा विस्मृति के कगार पर पहुँच गई है। संरक्षण के बिना हम अपनी सांस्कृतिक पहचान खो देंगे , क्योंकि वैश्वीकरण पश्चिमी विचारों को प्रमुखता दे रहा है। ऐसे में विचारणीय तथ्य यह है कि डिजिटल माध्यमों का उपयोग कर भारतीय ज्ञान परंपरा को किस प्रकार संरक्षित और संवर्धित किया जाए।

2. भारतीय ज्ञान परंपरा की विशेषताएँ

भारतीय ज्ञान गुरु-शिष्य परंपरा पर आधारित है, जहाँ मौखिक और अनुभव-आधारित शिक्षण प्रमुख है। वेदों में ब्रह्मांड विज्ञान, उपनिषदों में आत्म-ज्ञान, चरक संहिता में चिकित्सा और कौटिल्य के अर्थशास्त्र में शासन कला का वर्णन है। यह समग्रदृष्टिकोण आधुनिक विज्ञान से भिन्न है , जो विश्लेषणात्मक है।भारतीय ज्ञान परंपराबहुविषयक और समावेशी रही है। इसमें आध्यात्मिक , वैज्ञानिक, कलात्मक और सामाजिक ज्ञान का समन्वय देखने को मिलता है।

2.1 वैदिक और दार्शनिक परंपरा

वेद, उपनिषद, ब्राह्मण, आरण्यक और दर्शन के छह आस्तिक दर्शनों (न्याय , वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, वेदांत) ने तर्क, नैतिकता और आध्यात्मिक चिंतन की सुदृढ़ परंपरा विकसित की।

2.2 वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान

प्राचीन भारत में गणित (शून्य की अवधारणा) , खगोलशास्त्र, धातुकर्म, चिकित्सा और वास्तुकला का उल्लेखनीय विकास हुआ। आयुर्वेद और शल्यचिकित्सा इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

2.3 कला, साहित्य और लोकपरंपरा

संस्कृत, प्राकृत, पालि, अपभ्रंश और आधुनिक भारतीय भाषाओं में समृद्ध साहित्य रचा गया। संगीत , नृत्य, नाट्य, चित्रकला और लोककथाएँ भारतीय समाज की आत्मा हैं।

Licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0)

- वैदिक ज्ञान: ऋग्वेद में 10,000 सूक्त हैं, जो प्रकृति चक्र समझाते हैं।
- दार्शनिक ग्रंथ: न्याय, वैशविक दर्शन तर्कशास्त्र प्रदान करते हैं।
- वैज्ञानिक आयाम: आर्यभट्ट की गणित और सुश्रुत की शल्य चिकित्सा विश्वस्तरीय हैं।

ये विशेषताएँ डिजिटल प्लेटफॉर्म पर आसानी से अनुकूलित हो सकती हैं ।

3. डिजिटल युग की विशेषताएँ

डिजिटल युग की प्रमुख विशेषता सूचना की तीव्रता, सुलभता और वैश्विक पहुँच है।

- **डिजिटलीकरण:**भौतिक सामग्री को डिजिटल स्वरूप में परिवर्तित करना।
- **नेटवर्किंग:**इंटरनेट के माध्यम से वैश्विक जुड़ाव।
- **इंटरएक्टिविटी:**उपयोगकर्ता की सक्रिय भागीदारी।
- **दीर्घकालिक संरक्षण:**क्लाउड और बैकअप प्रणालियों से सुरक्षा।

ये सभी विशेषताएँ भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण में सहायक सिद्ध हो सकती हैं।

4. डिजिटल माध्यमों द्वारा संरक्षण के उपाय

4.1 पांडुलिपियों और ग्रंथों का डिजिटलीकरण

देश-विदेश में उपलब्ध लाखों हस्तलिखित पांडुलिपियाँ समय के साथ नष्ट हो रही हैं। उच्च गुणवत्ता वाले स्कैन , मेटाडाटा और डिजिटल कैटलॉग के माध्यम से इनका संरक्षण संभव है।

4.2 डिजिटल पुस्तकालय और आर्काइव

राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय, ऑनलाइन संग्रहालय और ओपन-एक्सेस प्लेटफॉर्म ज्ञान को आमजन तक पहुँचाते हैं।

4.3 ऑडियो-वीडियो दस्तावेजीकरण

मौखिक परंपराएँ , लोकगीत, मंत्रोच्चार, नृत्य-नाट्य और शिल्प-कौशल को ऑडियो-वीडियो के माध्यम से सुरक्षित किया जा सकता है।

4.4 ई-लर्निंग और ऑनलाइन पाठ्यक्रम

भारतीय दर्शन, योग, आयुर्वेद और भाषाओं पर ऑनलाइन पाठ्यक्रम युवाओं को जोड़ने में सहायक हैं।

4.5 कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डेटा विश्लेषण

AI के माध्यम से प्राचीन ग्रंथों का अनुवाद, लिप्यंतरण और विषयानुसार वर्गीकरण संभव है।

Licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0)

5. संरक्षण में आने वाली चुनौतियाँ

सोशल मीडिया के कारण सतही ज्ञान बढ़ा है, जबकि गहन अध्ययन कम हुआ। डेटा बाढ़ में प्राचीन ग्रंथ दब जाते हैं। साइबर सुरक्षा खतरे जैसे फेक न्यूज भारतीय दर्शन को विकृत करते हैं। वैश्विकरण से अंग्रेजी प्रमुख हो गई , हिंदी माध्यम कमजोर पड़ा।पश्चिमी ऐप्स (जैसे TikTok,youtube,instagram) सांस्कृतिक घुसपैठ करते हैं।युवा पीढ़ी संस्कृत भूल रही है एवं उसके उपयोग से विमुख हो रही है ।डिजिटल डिवाइस ग्रामीण क्षेत्रों में पहुँच रोकता है।ये चुनौतियाँ संरक्षण को जटिल बनाती हैं ।

5.1 तकनीकी चुनौतियाँ: डिजिटल फॉर्मेट का शीघ्र अप्रचलन, डेटा सुरक्षा और साइबर खतरों की समस्या।

5.2 भाषाई और लिपिगत जटिलताएँ: संस्कृत, ब्राह्मी, शारदा जैसी प्राचीन लिपियों का डिजिटलीकरण कठिन है।

5.3 बौद्धिक संपदा और नैतिक प्रश्न: पारंपरिक ज्ञान के दुरुपयोग और व्यावसायीकरण की आशंका।

5.4 सामाजिक सहभागिता की कमी: स्थानीय समुदायों और परंपरागत ज्ञान धारकों की सीमित भागीदारी।

6. समाधान और रणनीतियाँ

6.1 नीति और संस्थागत समर्थन : सरकारी नीतियाँ, वित्तीय सहायता और शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका महत्वपूर्ण है।

6.2 सामुदायिक सहभागिता: गुरु, विद्वान, कलाकार और कारीगरों को संरक्षण प्रक्रिया में सम्मिलित करना।

6.3 तकनीकी मानकीकरण: डिजिटल फॉर्मेट, मेटाडाटा और संरक्षण मानकों का विकास।

6.4 शिक्षा और जागरूकता: विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में भारतीय ज्ञान परंपरा को डिजिटल साधनों के साथ पढ़ाना।

7. डिजिटल युग में अवसर

डिजिटल प्लेटफॉर्म भारतीय ज्ञान को वैश्विक पहचान दिला सकते हैं। इससे न केवल सांस्कृतिक कूटनीति को बल मिलता है, बल्कि नवाचार, शोध और स्टार्टअप संस्कृति को भी प्रेरणा मिलती है।

8. निष्कर्ष

डिजिटल युग भारतीय ज्ञान परंपरा के लिए चुनौती और अवसर दोनों लेकर आया है। यदि तकनीक का उपयोग संवेदनशीलता, प्रामाणिकता और समावेशन के साथ किया जाए, तो यह परंपरा न केवल सुरक्षित रहेगी, बल्कि नई पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत भी बनेगी। भारतीय ज्ञान परंपरा का संरक्षण हमारी सांस्कृतिक पहचान और बौद्धिक स्वाधीनता का संरक्षण है , और डिजिटल माध्यम इस लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रभावी साधन सिद्ध हो

Licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0)

सकते हैं।डिजिटल युग भारतीय ज्ञान परंपरा को नष्ट नहीं , बल्कि प्रसारित करने का अवसर देता है। सामूहिक प्रयास से हम मानसिक स्वास्थ्य , पर्यावरण जैसे समस्याओं का समाधान निकाल सकते हैं। संरक्षण से भारत वैश्विक ज्ञान केंद्र बनेगा।

संदर्भ सूची (References)

- Acharya, D. (2018). *Indian knowledge systems: Concepts and perspectives*. New Delhi: Bharatiya Vidya Bhavan.
- Government of India. (2020). *Indian knowledge systems: A policy perspective*. Ministry of Education.
- Kumar, S. (2019). Digital preservation of cultural heritage in India. *Journal of Cultural Studies*, 12(2), 45–58.
- Mishra, R. (2017). Traditional knowledge and intellectual property rights in India. *International Journal of Law and Humanities*, 5(1), 33–47.
- National Digital Library of India. (2021). *Digital initiatives for knowledge preservation*. Retrieved from https://ndl.iitkgp.ac.in
- Radhakrishnan, S. (2009). *Indian philosophy* (Vol. 1–2). New Delhi: Oxford University Press.
- Sharma, A. (2020). Role of ICT in preserving indigenous knowledge systems. *International Journal of Information Technology*, 8(3), 112–120.
- UNESCO. (2015). *Safeguarding intangible cultural heritage in the digital age*. Paris: UNESCO.
- Satyapal & Prajapati. (2025). Integrating Bhartiya Gyan Parampara with contemporary technologies. *International Journal of Research in all Subjects in Multi Languages*
- डिजिटल युग में पारंपरिक भारतीय ज्ञान एवं दर्शन का संरक्षण. (2024).
- Indian Knowledge System: Bhartiya Gyan Parampara. (2025). Scribd.
- Exploring the Roots in the Bhartiya Gyan Parampara. *IJARSCT*.
- नई शिक्षा नीति, 2020. Drishti IAS.

Licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0)